अध्याय 42

मिस्र में यूसुफ़ के भाई

फ़िरौन के गाय और अनाज का स्वप्न का अर्थ बताने के बाद, यूसुफ़ को आने वाले अकाल से निपटने के लिए, जब मिस्र में सर्वसम्पन्नता थी, अनाज संचय करने का ज़िम्मेदारी सौंपी गई। इस प्रकार परमेश्वर ने मिस्र के लोगों को भारी अकाल के समय सुरक्षित रखा। केवल मिस्री ही नहीं थे जिन्होंने अनाज की कमी का सामना किया; बल्कि कनान में याकूब के परिवार को भी अनाज की आवश्यकता पड़ी। यूसुफ़ के प्रयास के द्वारा ही, परमेश्वर ने इस भयंकर भुखमरी के समय उन्हें भी सुरक्षित रखा।

अनाज खरीदने के लिए मिस्र की ओर यात्रा (42:1-5)

[1]जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है, तब उसने अपने पुत्रों से कहा, तुम एक दूसरे का मुँह क्यों देख रहे हो। [2]फिर उसने कहा, मैं ने सुना है कि मिस्र में अन्न है; इसलिए तुम लोग वहाँ जा कर हमारे लिए अन्न मोल ले आओ, जिस से हम न मरें, वरन् जीवित रहें। [3]सो यूसुफ़ के दस भाई अन्न मोल लेने के लिए मिस्र को गए। [4]पर यूसुफ़ के भाई बिन्यामीन को याकूब ने यह सोचकर भाइयों के साथ न भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े। [5]सो जो लोग अन्न मोल लेने आए उनके साथ इस्राएल के पुत्र भी आए; क्योंकि कनान देश में भी भारी अकाल था।

आयत 1. याकूब का अपने पुत्रों के साथ संबंध पहले से ही तनावपूर्ण था और वह अब उनसे और अधिक दुःखी हुआ जब उसने देखा कि वे परिवार को खिलाने के लिए इस भारी अकाल के मध्य, जो वे कनान में अनुभव कर रहे थे, कुछ भी नहीं कर रहे हैं। उसने पूछा, **तुम एक दूसरे का मुँह क्यों देख रहे हो।** दूसरे शब्दों में, "क्यों तुम खड़े होकर एक दूसरे को देख रहे हो और कुछ भी नहीं कर रहे हो?"

आयत 2. याकूब ने किसी विश्वासयोग्य सूत्र से **सुना** था कि मिस्र, वर्षों से **अन्न** संचय कर रहा था और अब उसके पास आवश्यकता से अधिक है। इसलिए उसने उनसे कहा कि **तुम लोग वहाँ जा कर हमारे लिए अन्न मोल ले आओ**, जिससे कि पूरा परिवार जीवित रहे और **न मरे**।

आयत 3. यहाँ लेखक याकूब के पुत्रों की पहचान, याकूब के पुत्रों से **यूसुफ़ के**

दस भाइयों में बदल दिया। यह बदलाव आने वाले घटनाओं के छायाचित्र पर आधारित है जब यूसुफ़ के भाइयों ने मिस्र से अनाज खरीदने का प्रयास किया था। जल्दी ही उनकी भेंट यूसुफ़ से होने वाली थी; जो यह न जानते थे मिस्र का यह सामर्थशाली शासक उनका ही भाई है।

आयत 4. इसके साथ ही लेखक अपने पाठकों को याकूब के घर में राहेल के पुत्रों के प्रति उसकी तरफ़दारी के कारण उत्पन्न झगड़े के बारे में भी स्मरण दिलाता है। इस संदर्भ में, बूढ़ा कुलपति में कुछ अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है; क्योंकि उसका प्रिय पुत्र यूसुफ़ जा चुका था (37:3, 31-35) तो **याकूब** उसके छोटे भाई बिन्यामीन के विषय पक्षपात करता था। इसी कारण **उसने यूसुफ़ के भाई बिन्यामीन को उसके दस भाइयों के साथ नहीं भेजा**। उसने अपने आप से कहा, "मुझे डर है कि कहीं उस पर कोई विपत्ति न आ पड़े।" याकूब इस बात को सुनिश्चित करना चाहता था कि कोई संभावित खतरा राहेल के आखिरी पुत्र पर न आ पड़े।

आयत 5. इसलिए **इस्राएल** [या याकूब] **के दस पुत्र**, **अन्न मोल लेने** के लिए अन्य लोगों के साथ मिस्र की लंबी यात्रा पर निकल पड़े क्योंकि **कनान में भी भारी अकाल था** (देखें 12:10; 26:1, 2)।

मिस्र में यूसुफ़ और उसके भाइयों की भेंट (42:6-17)

[6]यूसुफ़ तो मिस्र देश का अधिकारी था और उस देश के सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था; इसलिए जब यूसुफ़ के भाई आए तब भूमि पर मुँह के बल गिर के दण्डवत किया। [7]उन को देखकर यूसुफ़ ने पहिचान तो लिया, परन्तु उनके साम्हने भोला बनके कठोरता के साथ उन से पूछा, तुम कहाँ से आते हो? उन्होंने कहा, हम तो कनान देश से अन्न मोल लेने के लिए आए हैं। [8]यूसुफ़ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया, परन्तु उन्होंने उसको न पहचाना। [9]तब यूसुफ़ अपने उन स्वप्नों को स्मरण करके जो उसने उनके विषय में देखे थे, उन से कहने लगा, तुम भेदिए हो; इस देश की दुर्दशा को देखने के लिए आए हो। [10]उन्होंने उससे कहा, नहीं, नहीं, हे प्रभु, तेरे दास भोजनवस्तु मोल लेने के लिए आए हैं। [11]हम सब एक ही पिता के पुत्र हैं, हम सीधे मनुष्य हैं, तेरे दास भेदिए नहीं। [12]उसने उन से कहा, नहीं नहीं, तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आए हो। [13]उन्होंने कहा, हम तेरे दास बारह भाई हैं, और कनान देशवासी एक ही पुरूष के पुत्र हैं और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है और एक जाता रहा। [14]तब यूसुफ़ ने उन से कहा, मैं ने तो तुम से कह दिया, कि तुम भेदिए हो; [15]सो इसी रीति से तुम परखे जाओगे, फ़िरौन के जीवन की शपथ, जब तक तुम्हारा छोटा भाई यहाँ न आए तब तक तुम यहाँ से न निकलने पाओगे। [16]सो अपने में से एक को भेज दो, कि वह तुम्हारे भाई को ले आए और तुम लोग बन्धुवाई में रहोगे; इस प्रकार तुम्हारी बातें परखी जाएंगी, कि तुम में सच्चाई है कि नहीं। यदि सच्चे न ठहरे तब तो फ़िरौन के जीवन की शपथ तुम निश्चय ही भेदिए समझे जाओगे। [17]तब उसने

उन को तीन दिन तक बन्दीगृह में रखा।

आयत 6. यूसुफ़ की मिस्र की शासकीय भूमिका, उसको मिस्र **देश के शासक के रूप** में संबोधित किए जाने से बोध होता है [NJPSV में वज़ीर]। इब्रानी शब्द שַׁלִּיט *(शालीत)* का अर्थ "राज्यपाल" भी हो सकता है और अधिकांश आधुनिक अँग्रेजी अनुवाद इसी शब्द का प्रयोग करते हैं। जबकि आज के राज्यपालों को, यूसुफ़ की भांति जो मिस्र में उसे फ़िरौन के बाद दूसरा स्थान प्राप्त था, उस प्रकार उन्हें राज्यों या राष्ट्रों पर अधिकार प्राप्त नहीं है। इसलिए इस संदर्भ में शासक या वज़ीर का प्रयोग अधिक उपयुक्त है।

यूसुफ़ की एक मुख्य ज़िम्मेदारी उन लोगों को अनाज बेचना था जो इसको ढूँढने में आते थे। इसलिए जब उसके भाई राजधानी आए तो उन्होंने **तब भूमि पर मुँह के बल गिर के दण्डवत किया**। हाँ, उसके भाइयों ने यूसुफ़ को भूमि पर गिरकर किसी ईश्वर की आराधना की मुद्रा में दण्डवत नहीं किया; बल्कि ऐसा करके उन्होंने मिस्र देश के उच्चाधिकारी और उसके अधिकार के प्रति सम्मान व्यक्त किया था। इस बात से वे अज्ञान थे कि वे यूसुफ़ के बचपन के स्वप्न, जिसके प्रति वे जलन रखते थे, को पूरा कर रहे थे (37:7, 9, 10)।

आयत 7. जैसे ही उसने अपने भाइयों को देखा उसने **उन्हें तुरंत पहचान लिया किंतु उसने उनके सम्मुख अपने आपको छिपाए रखा**। इस पाठ का यह अनुवाद असमंजस में डालता हैः यूसुफ़ ने अपने वस्त्र नहीं बदले या फिर उसने अपने चेहरे पर नकाब नहीं पहना। बल्कि, ऐसा लगता है कि वह उनके प्रति शक प्रकट कर रहा था; इसलिए, उसने "उनके साथ विदेशी" की भांति व्यवहार किया (NRSV) या फिर "उसने अपने आपको अजनबी जताया" (NIV)। जब उन्होंने बहाना बनाना जारी रखा तो यूसुफ़ ने धमकी भरे शब्दों का प्रयोग किया और उनसे **कठोर शब्दों में बातें की** और पूछा, **तुम कहाँ से आए हो?** भाइयों को संभवतः उसके पद और अधिकार का आभास हो गया था तो उन्होंने उसे उत्तर दिया कि वे **कनान देश से अनाज खरीदने के लिए वहाँ आए हैं**।

आयत 8. यहाँ पर सातवीं आयत के समान **यूसुफ़ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया, परन्तु उन्होंने उसको न पहचाना** लिखा गया है। यूसुफ़ के भाई उसको क्यों पहचान नहीं सके? इसके कई कारण दिए जा सकते हैं। (1) उन्होंने उसे बीस वर्षों से नहीं देखा था। क्योंकि जब वह सत्तरह वर्ष का था तो उन्होंने उसे बंधुआई में बेचा था और उसके भाई उससे बड़े थे तो इन वर्षों में समय के साथ साथ वह बहुत बदल चुका होगा। (2) उन्होंने यह भी सोचा होगा कि उनके भाई की तो अब तक मृत्यु हो चुकी होगी (42:13)। (3) हो सकता है कि यूसुफ़ ने दाढ़ी मूछ मिस्र के परंपरा के अनुसार मुण्डा दी होगी। (4) वह मिस्री नाम से उनसे परिचित हुआ और वह मिस्र के उच्च अधिकारी के वस्त्र पहने हुए था। (5) उसने अपने भाइयों से मिस्री अनुवादक की सहायता से मिस्री भाषा में वार्तालाप की (42:23)। उसके भाइयों ने यह भी सोचा होगा कि वे यूसुफ़ को दोबारा कभी भी नहीं देखेंगे, कम से कम इस अवस्था में तो नहीं।

आयत 9. जैसे ही यूसुफ़ ने अपने भाइयों को उसे दण्डवत करते देखा तो उसे **उनके बारे में वह स्वप्न स्मरण आया जो उसने देखा था।** उसने भी अपने भाइयों को दोबारा देखने की आस नहीं रखी थी और वह अपने नए जीवन, मिस्र का वज़ीर, पति और दो बच्चों के पिता का भूमिका निभा रहा था। उसने अपने पहलौठे के नाम "मनश्शे" ("भुला दिया") यह कहकर रखा, "परमेश्वर ने मुझ से सारा क्लेश और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है" (41:51)। इसलिए, अपने भाइयों के साथ इस प्रकार की भेंट से वह अचम्भित था। उनके कारण, उसे वर्षों पुराने स्वप्न और वह दुःखदायी शब्द जो उसके भाइयों ने उसके बारे में कहे थे और जो उन्होंने उसके साथ किया था, स्मरण आया।

यूसुफ़ ने चालाकी से उनके विरूद्ध दोष लगायाः **"तुम भेदिए हो; इस देश की दुर्दशा को देखने के लिए आए हो।"** इस बहाने का दोष प्राचीन मिस्र की परिस्थिति से मिलता जुलता है। पहरेदारों को पूर्वी सीमा पर विदेशी भेदियों, जो देश में प्रवेश करने का प्रयास करते थे, को रोकने के लिए नियुक्त किया गया था। ऐसे भेदिए मिस्र के चारदिवारी के कमज़ोर भाग का पता लगाते थे ताकि वे मिस्र से अनाज लूट कर ले जा सकें।[1]

आयतें 10, 11. इस सामर्थशाली मिस्र अधिकारी द्वारा लगाए गए आरोप से उसके भाइयों ने अपने आपको निर्दोष साबित करने का प्रयास किया। सर्वप्रथम, उन्होंने उसे प्रभु कहकर संबोधित किया और उसे आदर और सम्मान दिया, उसके बाद उन्होंने अपने आपको उसका दास कहा जो **अनाज खरीदने के लिए मिस्र आए थे।** उन्होंने अपने ऊपर लगाए आरोप का इनकार यह कहकर किया, **हम सब एक ही पिता के पुत्र हैं।** उन्होंने यूसुफ़ के सम्मुख दास के समान खड़े होकर यह स्वीकार किया कि वे सीधे मनुष्य हैं। उन्होंने यह भी इनकार किया कि वे जब मिस्र में हैं तो किसी विदेशी सरकार द्वारा नियुक्त किए गए भेदिए हैं। उनकी सफ़ाई का केवल एक ही भाग सत्य थाः वे भेदिए तो बिल्कुल भी नहीं थे; परंतु वे सीधे भी नहीं थे (34:13; 37:32; 38:11)।

आयत 12. यूसुफ़ ने उनका विश्लेषण स्वीकार करने से इनकार किया। उसने ज़ोर दिया, **नहीं नहीं, तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आए हो।** यूसुफ़ का आरोप दोहराने का तात्पर्य यह हो सकता है कि वह अपने भाइयों के चरित्र का सामना कर रहा था और परिवार के बचे सदस्यों की जानकारी भी प्राप्त कर रहा था, वह उनके बुरे कार्यों के प्रति प्रतिक्रिया नहीं दिखा रहा था।

आयत 13. वे अपने ऊपर लगाए गए आरोप का इनकार करते रहे और कुछ और जानकारियां जोड़ीं जिसमें उनके परिवार का संक्षिप्त विश्लेषण शामिल थाः **हम तेरे दास बारह भाई हैं, और कनान देशवासी एक ही पुरूष के पुत्र हैं और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है और एक जाता रहा।** उन्हें यह पता नहीं था कि वे इस समय उसके सम्मुख सिर झुकाए खड़े हैं जिसे वे समझ रहे थे कि मर गया है।

आयतें 14, 15. यूसुफ़ इससे भी संतुष्ट नहीं हुआ और उसने अपनी बात जारी रखी, **मैं ने तो तुम से कह दिया, कि तुम भेदिए हो।** तब उसने उनके सम्मुख

शर्त रखी कि उनकी परीक्षा की जाएगी जिससे यह पता चल जाएगा कि वे सत्य बोल रहे हैं या नहीं। उसने यह शर्त रखी, **फ़िरौन के जीवन की शपथ, जब तक तुम्हारा छोटा भाई यहाँ न आए तब तक तुम यहाँ से न निकलने पाओगे।** कालांतर में, इस्राएल में, शपथ केवल परमेश्वर के नाम में ही खाई जाती थीः "यहोवा के जीवन की शपथ" (न्यायियों 8:19; रूत 3:13; 1 शमूएल 14:39, 45; 19:6; 20:3)। जबकि मिस्रियों के संदर्भ में, यूसुफ़ ने "फ़िरौन के जीवन की शपथ"[2] खाई कि उसके भाई मिस्र तब तक नहीं छोड़ेंगे जब तक वे बिन्यामीन को वहाँ नहीं ले आते।

आयत 16. यूसुफ़ यह चाहता था कि उनमें से कोई एक कनान जाकर **अपने भाई को लेकर आए** और बचे हुए लोग निगरानी में रहें जिससे कि उनकी **बातें परखी जाएंगी।** यूसुफ़ के तर्क में एक समस्या थी और यह समस्या उसके भाइयों के सम्मुख भी एक बड़ी समस्या थी, लेकिन वे इस विषय पर तर्क करने की परिस्थिति में नहीं थे। बिन्यामीन को मिस्र लाने से उन पर लगे भेदिए का आरोप कैसे हटेगा कि वे मिस्र की कमज़ोरी का पता लगाने आए थे? स्पष्ट है, यूसुफ़ अपने छोटे भाई को देखने का अवसर ढूँढ़ रहा था। वह संभवतः इस बात से डर भी रहा था कि उन्होंने उसके गायब होने के बारे में जो बातें याकूब को बताई थी उसके कारण वह उन पर बिन्यामीन को सुरक्षित रखने का भरोसा नहीं करेगा।

शपथ के सूत्र को दोहराते हुए यूसुफ़ ने यह निष्कर्ष निकालाः **यदि सच्चे न ठहरे तब तो फ़िरौन के जीवन की शपथ तुम निश्चय ही भेदिए समझे जाओगे।** जो बिन्यामीन को लेने के लिए कनान भेजा जाएगा और उसके लिए बिना वापस आएगा, तो बचे सभी लोग मिस्र के शत्रु ठहरेंगे।

आयत 17. इतना कहने के बाद यूसुफ़ ने आदेश दिया कि **उन्हें तीन दिन के लिए बंदीगृह में डाला जाए** कि उन्हें अपनी निराधार बातों के बारे में विचार करने दिया जाए कि वे उसका प्रत्युत्तर कैसे देते हैं। क्यों? क्या सभी विदेशी जो मिस्र में अनाज लेने के लिए आ रहे थे? तो क्या यह सामर्थशाली मिस्री शासक उनके बारे में इतना शकी था? भाइयों के पास बंदीगृह में बैठे बैठे इस विषय पर विचार करने का पर्याप्त समय था।

भाइयों का मिस्र छोड़ने से पहले उनमें से किसी एक का बंधुआ बने रहने की मांग (42:18-25)

[18]तीसरे दिन यूसुफ़ ने उन से कहा, एक काम करो तब जीवित रहोगे; क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूं; [19]यदि तुम सीधे मनुष्य हो, तो तुम सब भाइयों में से एक जन इस बन्दीगृह में बन्धुआ रहे और तुम अपने घर वालों की भूख बुझाने के लिए अन्न ले जाओ। [20]और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; इस प्रकार तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी और तुम मार डाले न जाओगे। तब उन्होंने वैसा ही किया। [21]उन्होंने आपस में कहा, निःसंदेह हम अपने भाई के विषय में

दोषी हैं, क्योंकि जब उसने हम से गिड़गिड़ा के विनती की, तौभी हम ने यह देखकर कि उसका जीवन कैसे संकट में पड़ा है, उसकी न सुनी; इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं। 22रूबेन ने उन से कहा, क्या मैं ने तुम से न कहा था कि लड़के के अपराधी मत बनो? परन्तु तुम ने न सुना: देखो, अब उसके लोहू का पलटा लिया जाता है। 23यूसुफ़ की और उनकी बातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती थी; इस से उन को मालूम न हुआ कि वह उनकी बोली समझता है। 24तब वह उनके पास से हटकर रोने लगा; फिर उनके पास लौटकर और उन से बातचीत करके उन में से शिमोन को छांट निकाला और उसके सामने बन्धुआ रखा। 25तब यूसुफ़ ने आज्ञा दी, कि उनके बोरे अन्न से भरो और एक एक जन के बोरे में उसके रूपये को भी रख दो, फिर उन को मार्ग के लिए भोजनवस्तु दो, सो उनके साथ ऐसा ही किया गया।

आयत 18. तीसरे दिन जब से **यूसुफ़** ने अपने भाइयों को बंदीगृह में डाला था, तो उसने यह निर्णय लिया कि उनमें से एक बंदीगृह में रहे और शेष घर वापस जाएं। पाठ यह नहीं बताता है कि क्या उसने अपनी योजना में फेर बदल किया या फिर पूरी घटना के दौरान यही उसकी योजना थी। यूसुफ़ ने पूरे दल को बंदीगृह में रखकर एक को छोड़ शेष को क्यों छोड़ दिया? प्रथम, प्रारंभ में उसने सभी लोगों को डराने के लिए बंदीगृह में डाला और उन्हें वर्तमान परिस्थिति पर विचार करने के लिए अपने मनों को टटोलने दिया (42:21, 22)। द्वितीय, उसे यह ज्ञात हुआ कि यदि उसने एक ही भाई को वापस कनान जाने दिया तो वह अपने पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के लिए अधिक अनाज नहीं ले जा पाएगा।

यूसुफ़ ने भाइयों को कठोरतापूर्वक चेतावनी दी, **एक काम करो तब जीवित रहोगे; क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूँ।** जब भी बाइबल किसी का वर्णन, परमेश्वर का भय रखने वाले के रूप में करता है, तो वह एक धर्मी व्यक्ति को प्रस्तुत करता है (20:11; 22:12) और वह एक कमज़ोर को नहीं सताएगा (लैव्य. 19:14; व्यव. 25:18)। पुराना नियम, परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों को इस्राएल तक ही सीमित नहीं करता है। उदाहरण के लिए, अय्यूब, ऊज़ का रहने वाला था और संभवतः वह एक एदोमी रहा होगा लेकिन उसका वर्णन एक धर्मी व्यक्ति के रूप में किया गया है (अय्यूब 1:1, 8, 9; देखें विलाप. 4:21)। उसी तरह सुलेमान ने अन्य जातीय लोगों के बारे में बोला जो परमेश्वर का भय मानते हैं (1 राजा 8:41-43)।

आयतें 19, 20. यूसुफ़ ने अपने बंधुओं को कहा कि यदि वे **सीधे मनुष्य** हैं (42:11) तो वे अपने **एक भाई** को बंदीगृह में रहने दें, जबकि शेष अनाज के साथ अपने भूखे परिवार को खिलाने के लिए कनान लौट जाएं। उनमें से जो कनान लौटे तो उनकी यह ज़िम्मेदारी थी कि वे अपने **सबसे छोटे भाई को मिस्र ले आएं** जिससे कि उनकी बातों की पुष्टि हो जाए; यूसुफ़ ने यह प्रतिज्ञा की कि यदि उन्होंने इन निर्देशों का पालन किया तो वे **नहीं मरेंगे**। भाइयों के पास मिस्री

शासक के निर्देशों को मानने के अलावा कोई और दूसरा विकल्प नहीं था और तब उन्होंने यही करने की ठान ली।

आयत 21. यूसुफ़ के शब्दों ने उनके मनों को आत्म-चिंतन और भाइयों को आपस में विचार विमर्श करने के अवसर प्रदान किया। उन्होंने वर्तमान परिस्थिति को, वर्षों पहले यूसुफ़ के प्रति उनके द्वारा किए गए कार्य का हिस्सा है और यह परमेश्वर का न्याय है। अपने स्वंय के स्व-चिंतन में वर्षों पूर्व किए गए गुनाह का उन्होंने एक दूसरे के साथ अंगीकार किया। **उन्होंने आपस में कहा, नि:संदेह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं, क्योंकि जब उसने हम से गिड़गिड़ा के विनती की, तौभी हम ने यह देखकर, कि उसका जीवन कैसे संकट में पड़ा है, उसकी न सुनी; इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं।** उत्पत्ति 37:23-28 में यह लिखा है कि उन्होंने यूसुफ़ का अंगरखा उतारा, उसे एक गड्ढा में फेंका और बाद में उसे इश्माएली व्यापारियों के हाथों बेच डाला। हाँ, इस अनुच्छेद से पहले हम उसके हृदय की वेदना (צָרָה, *साराह)* और उसका उस क्रूरता के प्रति विनती के बारे में नहीं पढ़ते हैं। भाइयों ने अपनी वर्तमान वेदना *(साराह)* की तुलना यूसुफ़ की वेदना के साथ की; क्योंकि उन्होंने उसके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया था और अब उन्हें यह डर लग रहा था कि उनको भी ऐसे ही भाग का सामना करना पड़ रहा है।

आयत 22. सबसे बड़े भाई **रूबेन** दूसरों पर दोष मढ़ने लगा। उसने दूसरों को स्मरण दिलाया, **क्या मैंने तुम से न कहा था, कि लड़के के अपराधी मत बनो? परन्तु तुम ने न सुना: देखो, अब उसके लोहू का पलटा दिया जाता है** (देखें 37:21, 22)। उसका वक्तव्य, परमेश्वर के उन वाणियों की प्रतिध्वनी है जो उसने नूह से जलप्रलय के पश्चात कहा था: "जो कोई मनुष्य का लोहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है" (9:6)। यह संदर्भ इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि आदि में कथाएं लिखे जाने से पूर्व, मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक पहुँचाई जाती थी। स्पष्ट है, याकूब ने इस प्रथा को अपने बच्चों को सिखाई होगी और रूबेन ने अपने भाइयों को बताया कि लहू बहाने का पलटा उन पर है।

रूबेन के शब्दों से यह आंका जा सकता है कि उसके भाइयों ने उसे कभी भी ठीक ठीक नहीं बताया कि यूसुफ़ के साथ क्या हुआ था; संभवतः वह अभी भी यही मान रहा होगा कि यूसुफ़ को मार दिया होगा। दूसरी बात, कुलपतियों के समय में अपहरण करना भी हत्या के समान देखा जाता होगा। यद्यपि मूसा के समय में इस प्रकार के अपराध को परमेश्वर की व्यवस्था में लिख दिया गया था (निर्गमन 20:13; 21:16)। रूबेन को इस बात आश्वासन था कि लहू का पाप अब उनके सिर पर है।

आयत 23. जब उन्होंने अपने दोष के बारे में चिंता व्यक्त की तो भाई इस बात से अज्ञान थे कि **यूसुफ़ उनकी बोली समझता है** क्योंकि उनकी बातचीत एक दुभाषिया के द्वारा होती थी। दुभाषिये के प्रयोग से उन्हें यह लग रहा था कि इस मिस्री शासक को इब्रानी भाषा समझ नहीं आती है।

आयत 24. अब तक तो यूसुफ़ अपनी भावनाओं पर नियंत्रण पाया हुआ था लेकिन अब वह अपने आपको और अधिक नियंत्रण नहीं कर पा रहा था। उनके पछताने को सुनकर **तब वह उनके पास से हटकर रोने लगा**। क्रोधित होने के बावजूद भी यूसुफ़ के मन में अपने भाइयों के लिए अब भी जगह थी। उसने उन्हें कठोर चेतावनी और शब्दों के साथ स्वीकार किया था लेकिन उन्हें देखकर वह भावनाओं में बह गया और उसका उसके परिवार के प्रति प्रेम फिर जग उठा (43:30; 45:14, 15; 50:17)। जब उसने अपने पर नियंत्रण पा लिया था तो वह वापस उनके पास **लौट आया** और **उनसे बातें की**।

तब उसने **शमौन को लिया और** उनके सामने **उसे बांधा**। शमौन याकूब का लिआ से उत्पन्न दूसरा पुत्र था, जबकि रूबेन उसका पहलौठा था (29:32, 33)। संभवतः यूसुफ़ ने रूबेन को इसलिए छोड़ा होगा कि जब उसने सुना कि उसके बड़े भाई ने उसे किस तरह बचाने का प्रयास किया होगा (42:22)। और इस प्रकार उसने दूसरे भाई शमौन को बंधक बनाया कि वह मिस्र में ही रहे।

आयत 25. इससे पहले कि यूसुफ़ अपने भाइयों को अपने पिता याकूब के पास वापस भेजे उसने अपने दासों को आदेश दिया कि **उनके बोरे अन्न से भरे और एक एक जन के बोरे में उसके रूपये को भी रख दे**। इसके साथ ही उसने उन्हें आदेश दिया कि **उन को मार्ग के लिए आवश्यक खाने पीने की वस्तु दे**: सो उनके साथ ऐसा ही किया गया। यूसुफ़ ने यह आज्ञा क्यों दी कि उसके भाइयों के पैसे उनके बोरे में रखकर उन्हें लौटा दिया जाए? क्या यह भाईचारे के प्रेम के कारण था या फिर उन्हें चोर साबित करके उन्हें और अधिक डराना चाहता था? यूसुफ़ के मन में उनके पैसे लौटाने के पीछे एक से अधिक कारण रहा होगा। बाहर से तो वह कठोर प्रश्न करने वाला दीख पड़ता था जबकि अंदर ही अंदर वह टूटा हुआ भाई था जो अपनी भावनाओं पर कठिनाई से नियंत्रण पा रहा था।

यूसुफ़ के भाई शिमोन के बिना अनाज के साथ घर लौटे (42:26-34)

[26]तब वे अपना अन्न अपने गदहों पर लादकर वहाँ से चल दिए। [27]सराय में जब एक ने अपने गदहे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला, तब उसका रूपया बोरे के मोहड़े पर रखा हुआ दिखलाई पड़ा। [28]तब उसने अपने भाइयों से कहा, मेरा रूपया तो फेर दिया गया है, देखो, वह मेरे बोरे में है; तब उनके जी में जी न रहा और वे एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे और बोले, परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है? [29]और वे कनान देश में अपने पिता याकूब के पास आए और अपना सारा वृत्तान्त उससे इस प्रकार वर्णन किया: [30]कि जो पुरूष उस देश का स्वामी है, उसने हम से कठोरता के साथ बातें कीं और हम को देश के भेदिए कहा। [31]तब हम ने उससे कहा, हम सीधे लोग हैं, भेदिए नहीं। [32]हम बारह भाई एक ही पिता के पुत्र हैं, एक तो जाता रहा, परन्तु छोटा इस समय कनान देश में

हमारे पिता के पास है। 33तब उस पुरूष ने, जो उस देश का स्वामी है, हम से कहा, इस से मालूम हो जाएगा कि तुम सीधे मनुष्य हो; तुम अपने में से एक को मेरे पास छोड़ के अपने घर वालों की भूख मिटाने के लिए कुछ ले जाओ। 34और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। तब मुझे विश्वास हो जाएगा कि तुम भेदिए नहीं, सीधे लोग हो। फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंप दूँगा, और तुम इस देश में लेन देन कर सकोगे।

आयत 26. क्योंकि उन्हें शिमोन को मिस्र में छोड़कर आना था तो उन्होंने दुःखी मन से **अपने गदहों पर अनाज लदा** और वापस कनान की ओर लंबी यात्रा पर निकल पड़े।

आयत 27. कुछ दूरी पर चलने के बाद, **सराय में एक ने अपने गदहे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला** जहाँ उन्होंने रात बिताने की योजना बनाई थी। जब उसने बोरा खोला तो वह यह देखकर दंग रह गया कि **उसका रूपया बोरे के मोहड़े पर रखा हुआ था।**

आयत 28. उसने दूसरे भाइयों से कहा, **मेरा रूपया तो फेर दिया गया है, देखो, वह मेरे बोरे में है।** अपनी इस दशा को देखकर उन पर भय छा गया। मिस्री शासक ने उन पर भेदिए होने का आरोप लगाया था और अब तो वह उन्हें चोर भी कहेगा। **तब उनके जी में जी न रहा और वे एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे और बोले, परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है?** पहले भाइयों ने अप्रत्यक्ष रूप से जो कहा था (42:21, 22) अब वे उसको प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार कर रहे थेः जो कुछ हमने यूसुफ़ के साथ किया था उसका यह ईश्वरीय दण्ड हो सकता है। उन्हें यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि मिस्र का कठोर हृदय वाला शासक उन्हीं का ही वर्षों पहले खोया भाई था जो परमेश्वर का एक ऐसा कारक बन गया था कि उसके भाई उसके सम्मुख और उसके पिता याकूब के सम्मुख अपने पापों का अंगीकार करे।

आयतें 29-32. वर्षों पहले भाइयों ने यह कहकर याकूब से झूठ बोला था कि वे यूसुफ़ के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। भेड़ बकरियों को चराने के बाद जब वे घर लौट रहे थे तो उन्होंने याकूब को यूसुफ़ का खून से भरा अंगरखा दिखाया था और यह निष्कर्ष निकाला था कि संभवतः किसी जंगली जानवर ने उसको खा गया होगा (37:32, 33)। इस बार जब वे **याकूब** के पास घर लौट रहे थे तो उन्हें यह बताना था कि शमौन के साथ क्या हुआ है। यह सत्य उनके पिता को अजीब सा लगा होगा बजाय इस झूठ के जो उन्होंने वर्षों से अपने पिता को विश्वास करने के लिए मजबूर किया होगा।

वृतांत यह बताता है कि **उन्होंने याकूब को वह सब बताया** जो उनके साथ हुआ था (42:29)। लेखक ने पूरे वार्तालाप और घटनाओं को संक्षिप्त में लिखा क्योंकि उसने पहले के अध्यायों में इसका विस्तृत विश्लेषण किया है। यहाँ उसने **जो पुरूष उस देश का स्वामी है** के बारे में कुछ मुख्य बातों का ही वर्णन किया है जिसने उनसे कठोरता से बातें की और देश का भेदिया होने का आरोप लगाया

(42:30)। भाइयों ने बताया कि उन्होंने किस प्रकार इन आरोपों का सच्चाई से खण्डन किया कि **वे सीधे लोग हैं, भेदिए नहीं** (42:31)। तब उन्होंने इन शब्दों में अपने विश्लेषण को जारी रखा, **हम बारह भाई एक ही पिता के पुत्र है, एक तो जाता रहा, परन्तु छोटा इस समय कनान देश में हमारे पिता के पास है** (42:32)।

आयतें 33, 34. भाइयों ने उस **देश के स्वामी** के प्रत्युत्तर का सारांश प्रस्तुत किया, जो उनके उत्तरों से असंतुष्ट दीख पड़ता था: **इस से मालूम हो जाएगा कि तुम सीधे मनुष्य हो; तुम अपने में से एक को मेरे पास छोड़ के अपने घर वालों की भूख बुझाने के लिए कुछ ले जाओ** (42:33)। इसके बाद उन्होंने सबसे कठिन परीक्षा, जो उस अधिकारी ने करने के लिए कहा था, **अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। तब मुझे विश्वास हो जाएगा कि तुम भेदिए नहीं, सीधे लोग हो।** इसके बाद उस अधिकारी ने वायदा किया, **फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंप दूंगा, और तुम इस देश में लेन देन कर सकोगे** (42:34)। लेन देन का वाक्यांश भाइयों ने बाद में याकूब के वास्तविक शब्दों के साथ जोड़ा होगा (42:14-16, 18-20) ताकि उन्हें प्रोत्साहन मिले और वह बिन्यामीन को उनके साथ वापस मिस्र की यात्रा में भेजने के लिए याकूब को मना सके। उन्होंने यह अनुमान लगाया होगा कि वे जीवित रहेंगे (42:18) और नहीं मरेंगे (42:20)। यह सब भाइयों पर निर्भर करता था कि वे यह प्रमाणित करें कि वे सीधे लोग हैं - लेकिन यह एक कठिन तथा मुश्किल चुनौती थी! उन्होंने तो धोखे से शकेम के लोगों को मारा था और उनके दासों, पत्नीयों और सम्पतियों पर कब्ज़ा किया था (34:13-29)। तब उन्होंने अपने ही भाई को मिस्र की ओर जाते हुए इश्माएलियों के एक करावान को बेच दिया था और उन्होंने उसके अंगरखा को लहू में भिगोकर अपने पिता को दिखा कर यह प्रमाणित करने का प्रयास किया कि वह मर चुका है (37:25-35)। वास्तव में, वे सीधे लोग नहीं थे।

उपजी परिस्थिति के प्रति याकूब का प्रतिक्रिया (42:35-38)

35यह कहकर वे अपने अपने बोरे से अन्न निकालने लगे, तब, क्या देखा, कि एक एक जन के रूपये की थैली उसी के बोरे में रखी है: तब रूपये की थैलियों को देखकर वे और उनका पिता बहुत डर गए। 36तब उनके पिता याकूब ने उन से कहा, मुझ को तुम ने निर्वंश कर दिया, देखो, यूसुफ़ नहीं रहा और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो: ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं। 37रूबेन ने अपने पिता से कहा, यदि मैं उसको तेरे पास न लाऊँ, तो मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना; तू उसको मेरे हाथ में सौंप दे, मैं उसे तेरे पास फिर पहुँचा दूँगा। 38उसने कहा, मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जाएगा; क्योंकि उसका भाई मर गया है, और वह अब अकेला रह गया: इसलिए जिस मार्ग से तुम जाओगे, उस में यदि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े, तब तो तुम्हारे कारण मैं इस बुढ़ापे की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर

जाऊँगा।

आयत 35. अपनी कहानी कहकर नौ भाइयों ने याकूब को मनाने की आशा की होगी कि वह बिन्यामीन को उनके साथ मिस्र भेज देगा ताकि वह कठोर शासक शिमोन को छोड़े। उनकी आशा तब टूटी जब उन्होंने अपने **बोरे खोले** और **उनके पिता ने उनके रूपये की थैली उनके बोरे में रखी देखी** सबके सब **डर गए।** इस घटना का अर्थ उन्हें भी समझ नहीं आ रहा था।

आयत 36. याकूब ने उन्हें दोषी ठहराते हुए कठोर शब्दों में जवाब दियाः **मुझ को तुम ने निर्वंश कर दिया, देखो, यूसुफ़ नहीं रहा और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो; ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं।** उसके शब्दों में एक माता पिता के लिए उनके संतान की मृत्यु के पश्चात एक बड़ी व्यक्तिगत् हानि जान पड़ती है (देखें 27:45; अय्यूब 1:18-20)। जब याकूब को यह विश्वास करने के लिए विवश किया गया कि यूसुफ़ की मृत्यु हो चुकी है, तो इससे उसे बहुत दुःख पहुँचा और शांत होना न चाहा (37:31-35)। इस बार शिमोन अपने भाइयों के साथ वापस नहीं आया और याकूब ने यह सोचा कि शिमोन भी मर चुका होगा। स्पष्टतया, उसे शक हुआ कि उसके पुत्र उसे पूरी कहानी नहीं बता रहे हैं। इन सभी दुर्घटनाओं को मन में लिए, कुलपति ने ठाना कि वह बिन्यामीन को नहीं खोने देगा क्योंकि वह याकूब की प्रिय पत्नी राहेल का अंतिम पुत्र था (42:4 की टिप्पणी देखें)।

आयत 37. याकूब ने यूसुफ़ और शिमोन के नुकसान का भाइयों को उत्तरदायी ठहराया, और इसने पहलौठे पुत्र **रूबेन** को अचेत प्रत्युत्तर देने के लिए प्रेरित कर दिया। उसने कहा कि **उसका पिता** उसके **दो पुत्रों** को घात कर दे यदि वह बिन्यामीन को वापिस न **लाया**। यह एक आंतरिक प्रण था, परन्तु इससे कोई समाधान नही होगा; इसने तो बस याकूब के दुःख को ही बढ़ाया होगा और परिवार में एक बड़ी दरार उत्पन्न कर दी होगी। याकूब को डर था कि कहीं वह बिन्यामीन को न खो दे, परन्तु अपने दो पोतों की मृत्यु निश्चय ही उसकी पीड़ा को कम नहीं करेगी। परन्तु रूबेन ने ज़ोर दिया; उसने अपने पिता से विनती की कि वह बिन्यामीन को उसके हवाले कर दे, यह प्रतिज्ञा दी, **मैं उसे तेरे पास फिर पहुंचा दूंगा** (देखें 43:8, 9)।

आयत 38. रूबेन के प्रस्ताव की याकूब का इनकार तुरंत और कठोर था: **मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जाएगा; क्योंकि उसका भाई मर गया है, और वह अब अकेला रह गया।** यह उसके पहलौठे पुत्र के लिए एक चुभने वाली फटकार थी। शब्द "मेरा पुत्र" और "उसका भाई" उसके और राहेल के दोनों पुत्रों और उसके बीच बहुत करीबी के दायरे को बनाते हैं। रूबेन को यह याद करवाने की ज़रूरत नहीं थी कि ये उसके पिता के प्रिय पारिवारिक सदस्य थे। जब याकूब ने कहा बिन्यामीन के विषय कहा, "वह अकेला रह गया है," वह यह कह रहा था "जो भाइयों ने पहले जान लिया थाः बिन्यामीन ही मात्र पुत्र था जो पिता की आँखों के सामने बना रहेगा।"[3]

वार्तालाप समाप्त हो गई थी जब **याकूब** ने टिप्पणी की कि **यदि मार्ग में** उस [बिन्यामीन] पर **कोई विपत्ती आ पड़े** तो वे **उसके इस बुढ़ापे में की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक[4] में उतर जाने के उत्तरदायी होंगे** (देखें 37:35)। दूसरे शब्दों में, उसके अपने दोनों प्रिय पुत्रों की मृत्यु का कारण अधोलोक में जाने के भाई ही उत्तरदायी होंगे।

जिस तरह से याकूब ने अपनी पत्नीयों और बच्चों को प्रेम, महत्वता में दर्जा दिया था उस तरीके से वह गलती पर था अर्थात राहेल और उसके पुत्रों को अपने स्नेह की उच्च श्रेणी में रखना, अन्य पत्नीयों और उनके बच्चों को अस्पष्ट घटते क्रम में रखना। जब परिवारिक सम्बन्ध परमेश्वर की योजना का अनुसरण नहीं करते, तो प्रेम पाने के लिए मुकाबले में कड़वे परिणाम सामने आएँगे, जैसे कि बहुविवाह में।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य (अध्याय 42)

पूरे इतिहास में, परमेश्वर ने अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए लोगों को तैयार करने में अच्छी और बुरी दोनों ही परिस्थितियों का प्रयोग किया है। यूसुफ़ मिस्र देश में कठिन परिस्थितियों में होते हुए भी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहा, दोनों ही परिस्थितियों में झूठे आरोपी कैदी के रूप में और विश्वायोग्य कैदी के रूप में (39:1-23)। इसके अलावा, यूसुफ़ ने सपनों का अर्थ बताने में सारा श्रेय परमेश्वर को दिया (40:1-23), फ़िरौन (यह बिना जाने ही) इस युवा इब्री को कैद से छुड़ाने और उसे मिस्र में अपना प्रधान बनाने में परमेश्वर का एक साधन बन गया। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी कि यूसुफ़ को इतना बड़ा अधिकार मिल गया; परमेश्वर ने उसे मिस्र के भूखे लोगों को और इसके साथ ही साथ आस-पास के देशों से आने वाले लोगों को अनाज प्रदान करने के लिए परमेश्वर ने उसे प्रधान बनाया था (41:1-57)। इस काम में किसी का भी हाथ नहीं था - न स्वयं यूसुफ़ का और न ही उसके सम्बन्धियों का - उसने महसूस किया कि परमेश्वर का परम उद्देश्य सारे परिवार को मिस्र में लाने के लिए कार्य करना था। जहाँ वे लगभग चार वर्षों तक रहे और बढ़े (15:13; निर्गमन 12:40, 41) मूसा के समय तक। तब परमेश्वर उन्हें अपने सर्वसामर्थी हाथ से वहाँ से निकाला और प्रतिज्ञा के देश में ले आया। टुकड़े-टुकड़े जोड़कर इस दिव्य घटना के अन्य भागों के साथ इनको एक स्थान पर रख दिया; परन्तु याकूब के परिवार के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह के कार्य को पूरा करने से पहले अन्य कई टुकड़ों को जुड़ना था।

परमेश्वर लोगों को उनके पापों को स्मरण करवाने और अपराध को प्रकट करने के लिए परिस्थितियों का प्रयोग कर सकता है। भयंकर अकाल के द्वारा, परमेश्वर ने याकूब के पुत्रों को यूसुफ़ के विरुद्ध किए गए अपराध स्मरण करवाया। अध्याय 42 के आरम्भ में, पूर्वसूचित अकाल कनान में पहले ही महसूस

होने लगा। याकूब ने सुना कि मिस्र देश में बहुत अनाज है, इसलिए उसने अपने पुत्रों को अनाज खरीदने के लिए वहाँ भेजा ताकि परिवार नाश होने से बचा रहे।

लगभग 250 मील की यात्रा करने के बाद भाई मिस्र की राजधानी में पहुँचे (42:1-5) जहाँ उनको मिस्र के अनाज विक्रेता और भण्डारण के प्रधान यूसुफ़ के पास भेज दिया। पाठक सोच रहे होंगे कि यह कैसा अनोखा संयोग है कि भाइयों को उसी ओर भेजा गया जहाँ यूसुफ़ था, जबकि मिस्र के कई अन्य स्थानों पर भी अनाज का भण्डारण किया गया था (41:48)। और यह भी बड़ा असम्भव सा दिखाई देता है कि यूसुफ़ जैसा इतना प्रभावशाली शासक देश में अनाज के लेनदेन की प्रत्येक कार्यवाही पर खुद बैठता था, जबकि उसकी सहायता करने के लिए बहुत से कार्यकर्ता थे (41:34-36)। परन्तु वह जो विश्वास की आँखों से देखता है, यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के अनुग्रह के कार्य ने मिस्र देश में भाइयों को सीधा यूसुफ़ के पास पहुँचने के लिए मार्गदर्शन किया।

जैसे ही याकूब के पुत्रों ने अपने भाई को देखा, उन्होंने उसे धनवान, और प्रतापी मिस्री को देखा। जब वे उसके सामने झुके, तब यूसुफ़ को स्मरण आया जो सपना उसने छोटी उमर में कनान में देखा था (37:7, 9)। तब वह अपने भाइयों से पूछताछ करने लगा और उनके द्वारा बताई गई बातों से उनकी ईमानदारी को परखने लगा (42:6-17)।

तीन दिन बाद, यूसुफ़ ने आदेश दिया कि उनमें से एक भाई (शिमोन) वहाँ हिरासत में रहेगा जबकि बाकी भाई अपने अनाज के साथ अपने देश में कनान में वापिस चले जाएँ। उसने उनके सामने एक मांग रख दी, यदि वह अपने भाई शिमोन को दोबारा देखना चाहते हैं तो वे मिस्र देश में आते हुए अपने छोटे (बिन्यामीन) को साथ लेकर आएँ। यूसुफ़ ने कहा यही एक उपाय है जिससे वे उसे विश्वास दिला सकें कि वे ईमानदार व्यक्ति हैं भेदिए नहीं हैं। उसने अपने भाइयों को आश्वासन दिया कि वह परमेश्वर का भय मानता है और उनके साथ सही बर्ताव करेगा, परन्तु यह उनकी उसके वचन की आज्ञाकारिता पर ही था कि मृत्यु का खतरा उसके बाद ही उन पर से टल सकेगा (42:18-20)।

जब मिस्री शासक ने अपनी बातचीत पूरी कर ली, तब भाइयों को स्मरण आया कि उन्होंने किस तरह से यूसुफ़ के साथ बुरा बर्ताव किया था, उसकी विनती और उसकी आत्मा की व्याकुलता को अनदेखा कर दिया था। वे अपने अपराध के विषय दोषी मान रहे थे और वे डर गए कि एक धर्मी जन के दण्ड का बदला उनके ऊपर आ पड़ा है (42:21)। तब रूबेन ने अपना मुँह खोला, उनको उनका अपराध स्मरण करवाया और कैसे उसने उनके सामने विनती की थी कि बच्चे यूसुफ़ के साथ दुष्टता न करें परन्तु तब उन्हांने उसकी एक न सुनी। "अब उसके लोहू का पलटा लिया जाता है," उसने उन्हें बताया (42:22)।

यह बातचीत उस प्रक्रिया का मात्र आरम्भ ही था जो उनको सच्चे पश्चाताप की ओर ले जाएगी। यह सम्भव है व्यक्तिगत पाप या सामूहिक पाप को बिना सच्चा पश्चाताप किए उसे मान लिया जाए; परन्तु यूसुफ़ इस बात से जागरूक था कि उसके भाई अपराध और ग्लानि से पीड़ित थे। उनकी पीड़ा से उसका हृदय

पिघल गया, "तब वह उनके पास से हटकर रोने लगा" (42:24)। यह इस बात का संकेत है कि यूसुफ़ की मुख्य सोच अपने भाइयों को दुःख पहुँचाने या जो उन्होंने किया था उसके बदले उनको पीड़ा देने की नहीं थी बल्कि प्रकट होता है कि वह परमेश्वर के मार्गदर्शन में, उनके पाप की गम्भीरता को समझने के लिए उनके विवेक को जागृत करना चाहता था। उनको यह दर्शाना ज़रूरी था कि वे बदल गए हैं। क्या उनके परिवार को फिर से मिलने की कोई आशा थी?

परमेश्वर लोगों को उनके पश्चाताप करने का अवसर देता है और उसकी बुलाहट के स्वयं को योग्य प्रमाणित करने के लिए वह उनके पापों को स्मरण करवाता है। जब यूसुफ़ ने फिर से अपना मानसिक सतुंलन प्राप्त किया, वह वापिस आया और उसने शिमोन को बन्दी बनाने और उसे हिरासत मे लेने का आदेश दिया। तब उसने अपने सेवकों को अपने भाइयों का धन उनके बोरों में डालने का निर्देश दिया और उनको कनान जाते समय रास्ते के लिए भी सामग्री दी। यूसुफ़ के दूसरे चरण के परीक्षण का उद्देश्य अपने भाइयों के साथ और अधिक मेल-जोल करना था, परमेश्वर के भय और उनके पाप के परिणामों में तेज़ी लानी थी। यूसुफ़ ने मात्र वहीं बात खत्म नहीं की कि उन्होंने क्या किया था; बेशक, यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वह उन्हें सच्चे पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर और परिवार में पूर्ण मेलमिलाप की ओर ले जाना चाहता था।

एक दिन की लम्बी यात्रा के बाद, भाई कहीं रात गुज़ारने के लिए ठहर गए। उनमें से एक ने अपने गधे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला। तब उसने "अपने धन को ... अपने बोरे के मुँह पर रखा हुआ देखा," उसने इस धन के विषय अपने दूसरों भाइयों को बताया कि उसका धन वापिस कर दिया गया है। वे भय से काँप गए और एक दूसरे से कहने लगे, "परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है?" (42:26-28)। एक बार फिर, यूसुफ़ ने उनके हृदयों में अपराध बोध को जगाने के लिए अवसर का लाभ उठाया कि उन्होंने उसे गुलामी में बेचने के द्वारा क्या किया। भले ही वह अपने भाइयों के प्रत्युत्तर को देखने के लिए वहाँ नहीं था, उसने प्रत्यक्ष रूप से विश्वास किया होगा कि वह उनके साथ अपनी अगली भेंट में यह देख लेगा कि क्या उनका भय और अपराध बोध "परमेश्वर भक्ति के दुःख" का संकेत था (2 कुरि. 7:11) या मात्र "संसारी शोक" था जो "मृत्यु उत्पन्न" करता है (2 कुरि. 7:10)।

बाइबल अंश के पहले भाग के पढ़ने से किसी व्यक्ति की धारणा के विपरीत, यूसुफ़ आरोप लगाने, धमकाने और कैद में डालने के द्वारा अपने भाइयों से बदला नहीं ले रहा था। बेशक उसने उनको बड़ी चिन्ता में डाल दिया था, विवरण बताता है कि उसका मुख्य उत्प्रेरित तथ्य और यूसुफ़ के मन में हमेशा यही प्रश्न था, "क्या मैं कभी अपने भाइयों को क्षमा कर सकता हूँ ताकि हम दोबारा एक परिवार बन जाएँ?" यूसुफ़ प्रत्यक्ष रूप से इस प्रश्न का उत्तर स्वयं भी नहीं जानता था, इसलिए वह उनको परखता रहा जब तक कि उसे विश्वास नहीं हो गया कि मेल-मिलाप सम्भव है।

कनान में वापिस आकर, भाइयों ने अपने पिता को जो कुछ घटित हुआ सब

कह सुनाया और कहा कि उनको अपने छोटे भाई के साथ शिमोन को छुड़ाने के लिए शीघ्र ही मिस्र होना होगा (42:29-34)। तब याकूब ने कह डाला, "मुझ को तुम ने निर्वंश कर दिया, देखो, यूसुफ़ नहीं रहा, और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो: ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं" (42:36)। राहेल की मृत्यु के बाद याकूब के जीवन में एक के बाद एक परेशानी आती रही; यहाँ तक कि वह पूरा विवरण नहीं जानता था, उसने अपने पुत्रों को यूसुफ़ और शिमोन के नुकसान होने का उत्तरदायी ठहरा दिया। अपने पुत्रों के नुकसान में बिन्यामीन के जुड़ने की सम्भावना पर वह वास्तव में डर गया था, भले ही रूबेन ने बिन्यामीन के सुरक्षित वापिस आने की ज़मानत में अपने दो पुत्रों के जीवन को दांव पर लगा दिया था (42:37)।

मानवीय दृष्टिकोण से, याकूब को ऐसा दिखाई दे रहा था मानो उसका सारा संसार उसके सामने ही तबाह हो गया है; परन्तु परमेश्वर के दृष्टिकोण से, जो कुछ भी हो रहा था वह याकूब से लाभ के लिए था, हानि के लिए नहीं। कहानी का यह भाग याकूब की निराशावादी पीड़ा में अन्त होता है, सोचते हुए कि उसके पास "शोक में" मर जाने के सिवाय और क्या है (42:38)। परन्तु उसकी रात के विलाप के बाद "प्रातः को आनन्द की ध्वनि होगी" (भजन 30:5)। शीघ्र ही उसे पता चलेगा कि उसके सारे पुत्र जीवित हैं और कुशल हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]ब्रूस के. वाल्टके, *जेनेसिसः ए कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, Mich.: जॉडरवैन पब्लिशर्स, 2001), 546. [2]"बीसवीं सदी के एक लेख में फ़िरौन के जीवन की शपथ पाई जाती है" (जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस,* द लिविंग वर्ड कमेंट्री [आस्टीन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979], 414)। [3]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26*, दि न्यू अमेरिकन कमैंट्री, वाल. 1बी (नैशविलेः ब्रोडमैन & होलमन पबलिशर्स, 2005), 784. [4]"शिओल" שְׁאוֹל *(शिओल)* मृतकों के निवास स्थान का इब्रानी नाम है (37:35; 44:29, 31; 1 राजा 2:6, 9)।